भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक-5 / नवम्बर -2021

शुभ दिपावली

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1/अंक-5 / नवम्बर -2021

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

मूल्य

आपका कीमती समय

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

नवम्बर माह

साका कैलेण्डर - 1943 विक्रम संवत - 2078 अयान - दक्षिणायन ऋतु - शरद

सोम	01 का. कृ. एकादशी रमा एकादशी	08 का. शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	15 का. शु. द्वादशी, तुलसी विवाह	22 मा. कृ. तृतीया	29 मा. कृ. दशमी
मंगल	02 का. कृ. त्रयोदशी, धनतेरस	09 का. शु. पंचमी, जया-लाभ-सौभाग्य पंचमी	16 का. शु. द्वादशी, वृश्चिक संक्राति प्रदोष व्रत	23 मा. कृ. चतुर्थी, संकष्टी चतुर्थी	30 मा. कृ. एकादशी, उत्पन्ना एकादशी व्रत
बुध	03 का. कृ. चतुर्दशी, काली - नरक-रूप चोदस छोटी दीवाली	10 का. शु. षष्ठी, छठ पूजा	17 का. शु. त्रयोदशी	24 मा. कृ. पंचमी	
गुरु	04 का. कृ. अमावस्या, महालक्ष्मी पूजा दीपावली	11 का. शु. सप्तमी	18 का. शु. चर्तुदशी	25 मा. कृ. षष्ठी	
शुक्र	05 का. शु. प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा अन्नकूट	12 का. शु. नवमी	19 का. शु. पूर्णिमा,कार्तिक पूर्णिमा व्रत, देव दीवाली	26 मा. कृ. सप्तमी	
शनि	06 का. शु. द्वितीया, भैया दूज, यम द्वितीया	13 का. शु. दशमी, कंस वध	20 मा. कृ. प्रतिपदा	27 मा. कृ. अष्ठमी, काल भैरव जयंती	
रवि	07 का. शु. तृतीया	14 का. शु. एकादशी, बाल दिवस, देवउठनी एकादशी	21 मा. कृ. द्वितीया	28 मा. कृ. नवमी	

का. - कार्तिक कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल मा. - मार्गशीर्ष माह

जानें क्यों मनाया जाता है धनतेरस का त्यौहार ?

कार्तिक मास (पूर्णिमांत) के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन समुद्र-मंथन के समय भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए इस तिथि को धनतेरस या धनत्रयोदशी [मृत कड़ियाँ] के नाम से जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक, धनवंतरी के प्रकट होने के ठीक दो दिन बाद माता लक्ष्मी प्रकट हुई थी, यही कारण है कि धनतेरस के दो दिन बाद दिवाली पर माता लक्ष्मी (धन की देवी) की पूजा करी जाती है।

मान्यता है कि संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए भगवान विष्णु ने ही धन्वंतरि के रूप में अवतार लिया था। इसलिए भगवान धन्वंतरि चिकित्सा के देवता माने जाते हैं और भारत सरकार ने धनतेरस को राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। भगवान धन्वंतरि की भक्ति और पूजा से आरोग्य सुख (स्वास्थ्य लाभ) और धन लाभ दोनों मिलता है।

भगवान धन्वन्तरि जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथों में अमृत से भरा कलश था। इसलिए इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा शुरू हुवी। धनतेरस के दिन घर के टूटे-फूटे बर्तनों के बदले तांबे, पीतल या चांदी के नए बर्तन तथा आभूषण खरीदना शुभ माना जाता है।

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। क्योंकि चांदी को चन्द्रमा का प्रतीक माना जाता है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में सन्तोष रूपी धन का वास होता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें तेरह गुणा वृद्धि होती है। इस अवसर पर कुछ लोग धनिया के बीज खरीद कर भी घर में रखते हैं। दीपावली के बाद इन बीजों को अपने बाग-बगीचों में या खेतों में बोना शुभ माना जाता हैं। कुछ लोग नई झाड़ू खरीदकर उसका पूजन करना भी शुभ मानते हैं। इसके अलावा धनतेरस के दिन ही दीपावली पर माँ लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा हेतु मूर्ति भी खरीदते हैं।

जैन आगम में धनतेरस को '**धन्य तेरस**' या '**ध्यान तेरस**' भी कहते हैं। भगवान महावीर इस दिन तीसरे और चौथे ध्यान में जाने के लिये योग निरोध के लिये चले गये थे। तीन दिन के ध्यान के बाद योग निरोध करते हुए दीपावली के दिन निर्वाण को प्राप्त हुये। तभी से यह दिन **धन्य तेरस** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, राजा बलि के भय से देवताओं को मुक्ति दिलाने के लिए भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था जिसकी कहानी सर्वविदित है।

नरक चतुर्दशी, काली चौदस, रूप चौदस, छोटी दीवाली या नरक निवारण चतुर्दशी का महत्व -

हिंदू कैलेंडर के अश्विन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (चौदहवें दिन) पर होती है। यह दीपावली के पांच दिवसीय महोत्सव का दूसरा दिन है। नरक चतुर्दशी को काली चौदस, रूप चौदस, छोटी दीवाली या नरक निवारण चतुर्दशी के रूप में भी मनाया जाता है।

हिन्दू साहित्य के अनुसार असुर (राक्षस) नरकासुर का वध कृष्ण, सत्यभामा और काली द्वारा इस दिन पर हुआ था और सोलह हजार एक सौ कन्याओं को नरकासुर के बंदी गृह से मुक्त कर उन्हें सम्मान प्रदान किया था। इस उपलक्ष्य में दीयों की बारात सजाई जाती है। इसे नरक से मुक्ति पाने वाला त्यौहार कहते हैं। मान्यता है कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन सुबह तेल लगाकर अपामार्ग की पत्तियां (चिचड़ी के पौधे) जल में डालकर स्नान करने और विधि विधान से पूजा करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इस दिन लोग अपने घर के मुख्य द्वार के बाहर यम के नाम का चौमुखा दीपक जलाते हैं, जिससे अकाल मृत्यु कभी न आए।

नरक चौदस को रूप चतुर्दशी क्यों कहा जाता है ?

रूप चतुर्दशी के दिन स्वच्छता और सुंदरता का भी महत्व है, इस दिन घरों की सफाई की जाती है और घर को चूने से पोतकर साफ किया जाता था। इस दिन सौंदर्य रूप श्री कृष्ण की पूजा करी जाती है और ऐसा माना जाता है कि इस दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर आटा, बेसन, हल्दी और तेल के उबटन से स्नान करे और शाम के समय पूजा करनी चाहिए।

पौराणिक कथा - हिरण्यगर्भ नामक एक राजा थे। उन्होंने राज पाठ सब छोड़कर अपना शेष जीवन तपस्या करने का निर्णय किया। उन्होंने कई वर्षों तक तपस्या की, लेकिन उनके शरीर पर कीड़े लग गए। उनका पूरा शरीर सड़ने लग गया। हिरण्यगर्भ को बहुत तकलीफ और दुख होने लगा कि अब वो पहले के समान तप नहीं कर पर रहा था। कुछ दिनों के बाद नारद जी वहां आये और तब राजा ने अपनी व्यथा उनसे कही। नारद मुनि ने उनसे कहा कि आप तप और साधना के दौरान शरीर की स्थिति सही नहीं रखते, इसलिए ऐसा परिणाम सामने आया। तब हिरण्यगर्भ ने इसका निवारण पूछा, तो नारद जी ने कहा कि कार्तिक मास कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन शरीर पर लेप लगा कर सूर्योदय से पूर्व स्नान करे, और रूप के देवता श्री कृष्ण की पूजा कर उनकी आरती करें, इससे आप फिर से स्वस्थ हो जायेंगे। राजा ने नारद जी ने जो कहा वही किया जिससे उसका शरीर पहले के समान स्वस्थ हो गया। इसलिए तबसे इस दिन को रूप चतुर्दशी भी कहा जाने लगा।

काली चौदस पूजा की विधि -

कार्तिक की चौदस को काली चौदस और यम चौदस भी कहा जाता है। इसमें बालाजी के लिए भी तेल का दिया किया जाता है। एक थाली में एक चौमुखा दिया और सोलह छोटे दिए रखे उसमे बाती और तेल डाले। फिर रोली, अबीर, गुलाल, पुष्प और चावल से पूजा करे। पूजन के बाद दीपक को घर के अलग अलग स्थानों पर रखे जैसे - पूजा घर में, परिण्डे (जल के स्थान) पर, तुलसी के गमले में, घर के पास किसी मंदिर में और पीपल के पेड़ के नीचे 1 दिया रखना चाहिए। इस दिन उपवास किया जाता है और जो 12 माह चौदस को उपवास करते है उन्हें काली उड़द की दाल एक लोहे की कड़ाई में भरकर दान करनी चाहिए। इसके अलावा धर्मराज की मूर्ति, तेल, कम्बल, छतरी और चप्पल भी दान कर सकते है।

अगर आप अपने

' शब्दों के मोती '

भारतीय परम्परा

' की माला में पिरोना '

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किया जाएगा

दीपावली क्यों मनाते है ?

रोशनी का यह त्योहार दीपावली भारत के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है जो अंधकार पर प्रकाश की विजय और समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

दीपावली (दीप + आवली) शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात 'दिया' व 'आवली' अर्थात 'रेखा' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। इस उत्सव में घरों के दरवाजों, गलियों, बाजारों व मंदिरों में दीप प्रज्वलित किया जाता है और रोशनी से सजाया जाता है। जिसकी रौनक बच्चों के साथ साथ हर उम्र के इंसान में देखने को मिलती है।

भारतवर्ष में दीपावली का आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक हर दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण स्थान है। दशहरा के बाद सभी को दीपावली का बेसब्री से इंतजार है और त्योहार की तैयारियां शुरू कर देते है। दीपावली का त्योहार कार्तिक अमावस्या को होता है, यह 5 दिनों लगातार चलता है। **इसका प्रारंभ कार्तिक त्रयोदशी को धनतेरस से होता है, उसके बाद नरक चतुर्दशी या रूप चौदस को छोटी दिवाली से मनाते है, फिर अमावस्या के दिन लक्ष्मी मां की पूजा करते है, उसके बाद नया साल, अन्नकूट और गोवर्धन पूजा की जाती है, त्योहार का समापन पांचवे दिन भैया दूज से होता है।** दीपावली का त्योहार देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धूमधाम से मनाया जाता है।

भारत देश में त्योहारों का काफी महत्व है, खासकर हिंदू धर्म में कई तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। लेकिन दीपावली की रौनक ही अलग होती है। रोशनी से डूबे शहर और गांव बेहद आकर्षक लगते हैं। शास्त्रों में दीपावली मनाने के अलग-अलग कारणों के बारे में बताया गया है। जगत विदित है कि हम लोग दीपावली मनाने का कारण भगवान राम, लक्ष्मण और सीता माता के 14 वर्ष का वनवास समाप्त कर अयोध्या लौटने व समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी के प्रकट होने को मानते हैं। क्योंकि यह हम बचपन से सुनते आये है लेकिन इसके अलावा शास्त्रों के अनुसार दीपावली का यह त्योहार अलग अलग युगों की महत्वपूर्ण घटनाओं का भी साक्षी रहा है।

1. **लक्ष्मी अवतरण –**

कार्तिक मास की अमावस्या को माता लक्ष्मी समुद्र मंथन द्वारा धरती पर प्रकट हुई थीं। दीपावली के त्यौहार को मनाने का सबसे खास कारण यही है। इसलिए आज माँ लक्ष्मी की पूजा करी जाती है तथा माँ लक्ष्मी के स्वागत के लिए हर घर को सजाया संवारा जाता है ताकि माता का आगमन हो और माँ का आशीर्वाद मिले।

2. भगवान विष्णु द्वारा लक्ष्मी जी को रिहा कराया -

इस घटना का उल्लेख हमारे शास्त्रों में मिलता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु के पांचवें अवतार (वामन अवतार) ने माता लक्ष्मी को राजा बलि से रिहा करवाया था।

3. श्री राम जी के वनवास से अयोध्या लौटने पर -

रामायण के अनुसार इस दिन जब भगवान राम, सीता जी और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या वापिस लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्या को दीप जलाकर रौशन किया गया था।

4. नरकासुर वध -

देवकी नंदन श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध कर 16000 स्त्रियों को इसी दिन मुक्त कराया था। इसी खुशी में दीपावली का त्यौहार दो दिन तक मनाया गया और इसे विजय पर्व के नाम से जाना गया।

5. पांडवों की वापसी -

महाभारत के अनुसार जब कौरव और पांडव के बीच होने वाले चौसर के खेल में पांडव हार गए, तो उन्हें 12 वर्ष का अज्ञात वास दिया गया था। पांचों पांडव अपना 12 साल का वनवास समाप्त कर उसी दिन वापस लौटे थे। उनके लौटने की खुशी में दीप जलाकर खुशी के साथ दीपावली मनाई गई थी।

6. जैन धर्म -

दीपावली का दिन जैन संप्रदाय के लोगों के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जैन धर्म इस पर्व को भगवान महावीर जी के मोक्ष दिवस के रूप में मनाता है। ऐसा माना जाता है कि कार्तिक मास की अमावस्या के दिन ही भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

7. सिक्खों की दिवाली -

सिख धर्म के लिए भी दीपावली बहुत महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन को सिख धर्म के तीसरे गुरू अमरदास जी ने लाल पत्र दिवस के रूप में मनाया था जिसमें सभी श्रद्धालु गुरू से आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। इसके अलावा सन् 1577 में अमृतसर के हरिमंदिर साहिब का शिलान्यास भी दीपावली के दिन ही किया गया था। सन् 1619 में सिक्ख गुरू हरगोबिन्द जी को ग्वालियर के किले में 52 राजाओं के साथ मुक्त किया जाना भी इस दिन की प्रमुख ऐतिहासिक घटना रही है। इसलिए इस पर्व को सिक्ख समाज बंदी छोड़ दिवस के रूप में भी मनाता हैं। इन राजाओं व हरगोबिंद सिंह जी को मुगल बादशाह जहांगीर ने नजरबंद किया हुआ था।

8. विक्रमादित्य का राजतिलक -

भारतवर्ष के महान राजा विक्रमादित्य का राजतिलक इस दिन हुवा था, जिससे दीपावली का महत्व और खुशियों दोगुनी हो गईं।

9. आर्य समाज -

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय संस्कृति के महान जननायक ने दीपावली के दिन अजमेर (राजस्थान) के निकट अवसान लिया और इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की गई थी। इस कारण भी दीपावली का त्यौहार विशेष महत्व रखता है।

10. फसलों का त्यौहार –

खरीफ की फसल के समय ही ये त्यौहार आता है जो कि किसानों के लिए समृद्धि और खुशहाली का संकेत होता है । इसलिए दीपावली का त्यौहार किसान लोग भी बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।

11. **हिंदू नव वर्ष का दिन –**
दीपावली के साथ ही हिंदू व्यापारियों का नया साल शुरू हो जाता है और व्यवसायी इस दिन अपने खातों की नई किताबें शुरू करते हैं।

12. **आर्थिक दृष्टिकोण –**
दिवाली का त्यौहार भारत में एक प्रमुख खरीदारी की अवधि का प्रतीक है। यह पर्व नए कपड़े, घर के सामान, उपहार, सोने के आभूषण, चांदी के बर्तन और अन्य बड़ी खरीदारी का समय होता है। इस त्यौहार पर खर्च और खरीद को शुभ माना जाता है क्योंकि माता लक्ष्मी को, धन, समृद्धि, और निवेश की देवी माना जाता है।

दीपावली का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। यह पर्व सामूहिक, पारिवारिक व व्यक्तिगत सब तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। हर प्रांत या क्षेत्र में दीपावली मनाने के कारण एवं तरीके अलग -अलग हैं पर सभी जगह यह पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। लोगों में दीपावली की बहुत उमंग होती है पूरे साल इंतजार करते है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बांटते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनायी जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है

आप सभी की भारतीय परंपरा टीम की तरफ से दीपावली के ढेरो बधाईया।
आपकी दीपावली मंगलमय हो, दीपावली पर्व को धूमधाम से मनाये साथ में कोरोना महामारी, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और पटाखों से जलने से स्वयं बचे और दूसरों की भी रक्षा करें।

दीपावली पूजन विधि और पूजा सामग्री । लक्ष्मी पूजन की विधि-

पूजन सामग्री -

महालक्ष्मी पूजन में कुमकुम, चावल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, धूप, कपूर, गूगल धूप , दीपक, रुई, कलावा (मौली), नारियल, शहद, दही, गंगाजल, गुड़, धनिया, फल, फूल, जौ, गेहूँ, दूर्वा, चंदन, सिंदूर, घृत, पंचामृत, दूध, मेवे, खील, पुष्प, पताशे, गंगाजल, यज्ञोपवीत, श्वेत वस्त्र, इत्र, चौकी, कलश, कमल गट्टे की माला, शंख, लक्ष्मी व गणेश जी का चित्र या प्रतिमा, आसन, थाली, चांदी का सिक्का, हल्दी का गठिया, पिली 7 कोडिया, मिष्ठान्न, ।। दीपक इत्यादि वस्तुओं को पूजन के समय रखना चाहिए।

लक्ष्मी पूजन की विधि -

भारत में दीपावली का त्यौहार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। दीपावली के दिन विधि पूर्वक धन की देवी माँ लक्ष्मी की पूजा होती है। इसके साथ ही इस दिन भगवान विष्णु, गणेश जी, यमराज, चित्रगुप्त, कुबेर, भैरव, हनुमानजी, कुल देवता व पितरों का भी श्रद्धा पूर्वक पूजना चाहिए।

- सबसे पहले चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं, चौकी के बीच में माँ लक्ष्मी, सरस्वती व गणेश जी की प्रतिमा को विराजमान करें। लक्ष्मी जी के दाहिने तरफ गणेश जी की मूर्ति रखे । मूर्तियों का मुख पूर्व या पश्चिम की तरफ होना चाहिए।
- अब दोनों मूर्तियों के आगे थोड़े रुपए इच्छा अनुसार सोने चांदी के आभूषण और चांदी के 5 सिक्के भी रख दे, यह चांदी के सिक्के ही कुबेर जी का रूप होता है।
- लक्ष्मी जी की मूर्ति के दाहिनी ओर चावल से अष्टदल बनाएं यानी कि आठ दिशाएं उंगली से बनाए बीच से बाहर की ओर फिर जल से भरे कलश को उस पर रख दे, यह सागर देव का प्रतीक होता है।
- कलश के अंदर थोड़ा चंदन दुर्व पंचरत्न सुपारी आम के या केले के पत्ते डालकर मौली से बंधा हुआ नारियल उसमें रखें, कलश पर मौली बांधे, तिलक लगाए और थोड़ा सा गंगाजल उसमें मिलाएं ।
- इसके बाद चौकी के सामने बाकी पूजा सामग्री की थाली रखे, दो बड़े दिये में देसी घी और ग्यारह छोटे दिये में सरसों का तेल भर तैयार करके रखे ।
- अब हाथ में थोड़ा गंगाजल लेकर प्रतिमा को पवित्र करने के लिए इस मंत्र का जाप करते हुए छिड़कें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः वाह्याभंतरः शुचिः।।

- अब जल अपने आसन पर और अपने आप पर भी छिड़कें। इसके बाद पृथ्वी माता को प्रणाम करें और आसन पर बैठकर संकल्प लें।
- संकल्प के लिये हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लें साथ में कुछ द्रव्य यानि पैसे भी लें अब हाथ में लेकर संकल्प मंत्र का जाप करते हुए संकल्प कीजिए कि मैं अमुक व्यक्ति, अमुक स्थान एवं समय एवं अमुक देवी-देवता की पूजा करने जा रहा हूं, जिससे मुझे पूजा का फल प्राप्त हो। इस प्रक्रिया में निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

पृथ्वेति मंत्रस्य मेरूपृष्ठः ग ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः॥
ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्॥
पृथिव्यै नमः आधारशक्तये नमः

- अब नियमानुसार सबसे पहले गणेश जी की पूजा करें। फिर लक्ष्मी जी की आराधना करें। इसके बाद कलश की पूजा करे, इसी के साथ देवी सरस्वती, भगवान विष्णु, मां काली और कुबेर की भी विधि विधान पूजा करें। फिर नवग्रहों की पूजा करें। इसके लिये हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर नवग्रह स्तोत्र बोलें। उसके बाद भगवती षोडश मातृकाओं का पूजन करें। माताओं की पूजा के बाद रक्षाबंधन किया जाता है। रक्षाबंधन के लिये लच्छे / मौली लेकर गणेश जी पर चढाइये फिर अपने हाथ में बंधवा लीजिए और तिलक लगा लें।
- इसके बाद महालक्ष्मी की पूजा करें। माँ लक्ष्मी जी की पूजा के लिए वेदों में कई महत्वपूर्ण मन्त्र दिये गये हैं। ऋग्वेद में माँ लक्ष्मी जी के इस मंत्र का उल्लेख किया गया है-

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरूणं धनमस्तु ते॥
अश्वदायै गोदायै धनदायै महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

- पूजा करते समय 11 या 21 छोटे सरसों या तिल के तेल के दीपक और एक बड़ा दीपक घी से प्रज्वलित करना चाहिए। एक दीपक चौकी के दाईं ओर एक बाईं ओर रखना चाहिए। जलाए गए 11 या 21 दीपकों को घर के सभी दरवाजों के कोनों में रख दें। इस दिन पूजा घर में पूरी रात एक घी का दीपक भी जलाया जाता है।
- भगवान के बाईं तरफ घी का दीपक जलाएं और उन्हें फूल, अक्षत, जल और मिठाई अर्पित करें।
- दीपक पूजन के बाद घर की महिलाएं अपने हाथ से सोने-चांदी के आभूषण और सुहाग का सामान माँ लक्ष्मी को अर्पित करे। अगले दिन स्नान और पूजा के बाद आभूषण एवं सुहाग की अन्य सामग्री जो अर्पित की थी उसे मां लक्ष्मी का प्रसाद समझकर स्वयं प्रयोग करें। इससे मां लक्ष्मी की कृपा सदा बनी रहती है।
- अब श्री सूक्त और कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।
- अब भोग लगाकर बाकी सारी पूजा सामग्री चौकी पर अर्पण करें।
- भगवान को प्रणाम करे और पूजा के दौरान हुई किसी ज्ञात-अज्ञात भूल के लिए क्षमा-प्रार्थना करें।
- अंत में गणेश जी और माता लक्ष्मी की आरती उतारकर पूजा संपन्न करें।

Thakur Complex
MAHA RERA NO : P51800027248
WHITE BERRY
RESIDENCY
- Terrace Garden with Lift Accessibility
- Gymnasium with Yoga Room
- Work Space Area in Building
- Indoor Games - Table Tennis, Carrom and Chess
- Library
- Adjoining Jain Derasar
- Landscape Garden
- 1 Parking Per Flat
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69

Kings wed Queens
WEDDING
- LOGO
- INVITATION
- STATIONERY
- WEBSITE
- MOBILE APP
- Festival Greeting
Create your MEMORIES With Us
www.kingswedsqueens.com

दीपावली पर किये जाने वाले उपाय

दीपावली एवं धनतेरस को धन की देवी माँ लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं जिससे माँ लक्ष्मी धन में वृद्दि का आशीर्वाद देती है। शास्त्रों में बताए उपायों की अपनाकर माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते है।

- दीपावली के दिन आप एक नई झाड़ू खरीदे। इस नई झाड़ू की पूजा कर आप पूरे घर की सफाई नई झाड़ू से करें। जिसके बाद झाड़ू को छुपाकर रख दें। दीपावली के दिन मंदिर में झाड़ू का दान करना शुभ माना है।

- दीपावली के दिन एक बिना कटा - फटा पीपल का पत्ता तोड़कर घर में लाए और इस पत्ते पर 'ऊँ महालक्ष्म्यै नमः' लिखकर पूजा स्थल पर रख दें।

- दीपावली पर लक्ष्मी पूजन के बाद घर के सभी कमरों में शंख और घंटी बजाना चाहिए। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा और दरिद्रता बाहर चली जाती है और माँ लक्ष्मी का आगमन घर में होता है।

- दीपावली पर लक्ष्मी पूजन में पीली कौड़ियां भी रखनी चाहिए। ये कौडिय़ा पूजन में रखने से माँ बहुत ही जल्द प्रसन्न होती हैं। इससे धन संबंधी सभी परेशानियां खत्म होती है।

● दीपावली पर तेल का दीपक जलाएं और दीपक में एक लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। किसी भी हनुमान मंदिर में जाकर दिया लगा सकते हैं।

● दीपावली पर किन्नरों को मिठाइयां और पैसे देकर बदले में किन्नर से उसकी खुशी से एक रूपये के सिक्के को मांग कर अपनी तिजोरी या अपने पर्स में रखें। इससे बरकत होती है ।

● दीपावली पर सुबह-सुबह शिवलिंग पर तांबे के लोटे से जल अर्पित करें और शिवलिंग पर अक्षत चढ़ाएं। खंडित चावल शिवलिंग पर चढ़ाना नहीं चाहिए।

● लक्ष्मी पूजन के समय हल्दी की गांठ भी साथ रखें। लक्ष्मी पूजन होने के बाद इन हल्दी की गांठ को घर में वहां रखें जहां पर आप अपने रूपये-पैसे रखते हो। ऐसा करने से धन में बरकत होगी।

● दिवाली की रात लक्ष्मी पूजन से पहले लौंग और इलायची का मिश्रण बना लें। फिर इस मिश्रण से सभी देवी-देवताओं को तिलक लगाएं। इस प्रयोग से माँ लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

● दीपावली पर लक्ष्मी पूजन करने के लिए स्थिर लग्न श्रेष्ठ माना जाता है। इस लग्न में पूजा करने पर महालक्ष्मी स्थाई रूप से घर में निवास करती हैं।

● दीवाली की रात सोने से पहले किसी चौराहे पर या किसी पीपल के पेड़ के नीचे तेल का दीपक जलाएं। यह उपाय दीपावली की रात में किया जाना चाहिए। ध्यान रखें दीपक लगाकर घर लौट आए, वापिस पीछे पल्नटकर नही देखें।

● लक्ष्मी पूजन के समय एक नारियल लें और उस पर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि अर्पित करें और उसे भी पूजा में रखें।

● प्रथम पूज्य श्रीगणेश को दूर्वा अर्पित करें। दूरवा की 27 गांठ गणेशजी को चढ़ाने से उनकी कृपा प्राप्त होती है। दीपावली के शुभ दिन यह उपाय करने से गणेशजी के साथ महालक्ष्मी की कृपा भी प्राप्त होती है।

- महालक्ष्मी के चित्र या मूर्ति का पूजन करें, जिसमें लक्ष्मी अपने स्वामी भगवान विष्णु के पैरों के पास बैठी हैं। ऐसे करने पर देवी बहुत जल्द प्रसन्न होती हैं।

- दीपावली की रात अपने घर में श्रीयंत्र स्थापित करें और रात को कनकधारा स्त्रोत का पाठ करें। रामरक्षा स्तोत्र या हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ भी किया जा सकता है। धन वृद्धि में यह उपाय बड़ा शुभ और सफल माना जाता है।

- यदि संभव हो सके तो दीवाली वाले दिन किसी तालाब या नदी में मछलियों को आटे की गोलियां बनाकर खिलाएं। इस पुण्य कर्म से बड़े से बड़े संकट भी दूर हो जाते हैं।

- एक बात का विशेष ध्यान रखें कि माह की हर अमावस्या पर पूरे घर की अच्छी तरह से साफ-सफाई की जानी चाहिए। साफ-सफाई के बाद घर में धूप-दीप-ध्यान करें। इससे घर का वातावरण पवित्र और बरकत देने वाला बना रहेगा।

- लक्ष्मी पूजन में सुपारी रखें। सुपारी पर लाल धागा लपेटकर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि पूजन सामग्री से पूजा करें और पूजन के बाद इस सुपारी को तिजोरी में रखें।

- घर में स्थित तुलसी के पौधे के पास दीपावली की रात में दीपक जलाएं। तुलसी को वस्त्र अर्पित करें।

- जो लोग धन का संचय बढ़ाना चाहते हैं, उन्हें तिजोरी में लाल कपड़ा बिछाना चाहिए। इसके प्रभाव से धन का संचय बढ़ता है। महालक्ष्मी का ऐसा फोटो रखें, जिसमें लक्ष्मी बैठी हुई दिखाई दे रही हैं।

- महालक्ष्मी के महामंत्र ऊँ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मयै नमः का कमलगट्टे की माला से कम से कम 108 बार जप करें।

● ब्रह्म मुहूर्त में लक्ष्मी जी के मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना कर, गुलाब का इत्र, गुलाब की अगरबत्ती, कमल पुष्प, लाल गुलाबी वस्त्र तथा खीर का नैवेद्य लगाएं।

● दीपावली की रात लक्ष्मी पूजा करते समय एक थोड़ा बड़ा घी का दीपक जलाएं, जिसमें नौ बत्तियां लगाई जा सके। सभी 9 बत्तियां जलाएं और लक्ष्मी पूजा करें।

● दीपावली की रात में लक्ष्मी पूजन के साथ ही अपनी दुकान, कम्प्यूटर आदि ऐसी चीजों की भी पूजा करें, जो आपकी कमाई का साधन हैं।

● धनिया धन को आकर्षित करने वाली वनस्पति है। भोजन में इसका प्रयोग मस्तिष्क में जाकर नए विचारों का सृजन करके धनार्जन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भगवती लक्ष्मी को दिवाली पर धनिया के बीज और गुड़ अर्पित करना शुभ माना जाता है।

● भाग्योदय के लिए लक्ष्मी जी को चने की दाल कच्ची चढ़ाकर बाद में पीपल वृक्ष में चढ़ा दें।

● महानिशा के पूजन में माँ लक्ष्मी को धान का लावा और पताशे अर्पण करने चाहिए।

● अच्छे कामकाज में अगर नजर लगती रहती है और बाधा आती रहती है तो रात्रि में कार्यस्थल पर से एक फिटकरी का बड़ा टुकड़ा ले कर उतारा उतारें तथा चौराहे पर फेंक दें। इससे कार्य क्षेत्र की बाधा दूर होती है।

● गंदी जगह, दुर्गंध वाली जगह तथा जहां पर लोग व्यसन करते हैं, आपसी झगड़े में लिप्त रहते हैं, जहां स्त्रियों का अपमान होता हो या वहां की स्त्रियों का व्यवहार ठीक न रहे ऐसे स्थान पर लक्ष्मी जी कभी नहीं रहती हैं, जीवन में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

- व्हाट्सएप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका में जहां कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुंच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटिया हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोए रखने एव ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपको सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

गोवर्धन पूजा –

अन्नकूट या गोवर्धन पूजा दिवाली के पांच दिनों तक मनाए जाने वाले त्योहारों का ही एक हिस्सा है। दीपावली के अगले दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को अन्नकूट और गोवर्धन पूजा का त्यौहार मनाया जाता है। पौराणिक कथानुसार यह पर्व द्वापर युग में आरम्भ हुआ था क्योंकि इसी दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोवर्धन और गायों की पूजा के निमित्त पके हुए अन्न भोग में लगाए थे, इसलिए इस दिन का नाम अन्नकूट पड़ा। अन्नकूट पूजा के पर्व पर अन्न का विशेष महत्व है । इस पर्व पर सब्जी और पूरी का प्रसाद बना कर चढ़ाया जाता है। इस समय सर्दी का मौसम शुरू होता है तो नई सब्जियां आती है, जो भी सब्जियां बाजार में मिलती हैं सभी सब्जियों को मिलाकर और उसमे दाल (मूंग दाल और चावल) डालकर प्रसाद तैयार किया जाता है। गोवर्धन पूजा में इस अन्नकूट सब्जी का ही भोग लगाया जाता है।

गोवर्धन पूजा क्यों करते हैं ?

गोवर्धन पूजा की एक और मान्यता है - एक बार देवराज इन्द्र को अभिमान हो गया था। इंद्रदेव का अभिमान चूर करने हेतु भगवान श्री कृष्ण ने एक लीला रची। प्रभु की इस लीला में एक दिन उन्होंने देखा के सभी वृजवासी उत्तम पकवान बना रहे हैं और किसी पूजा की तैयारी में जुटे हुए है। तब श्री कृष्ण ने बड़े भोलेपन से अपनी मैया यशोदा से पूछा कि " मैया ये आप लोग किसकी पूजा की तैयारी कर रहे हैं?" कृष्ण की बातें सुनकर मैया बोली लल्ला हम देवराज इन्द्र की पूजा की तैयारी कर रहे हैं। मैया के ऐसा कहने पर श्री कृष्ण बोले मैया हम इन्द्र की पूजा क्यों करते हैं? तो मैया ने कहा वह हर वर्ष वर्षा करते हैं जिससे अन्न की पैदावार होती है और जिससे हमारी गायों को चारा मिलता है। भगवान श्री कृष्ण बोले तब तो हमें गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए क्योंकि हमारी गाये तो वहीं चरती हैं, इस दृष्टि से गोवर्धन पर्वत ही पूजनीय है और वैसे भी इन्द्रदेव ने तो कभी दर्शन भी नहीं दिए और उनकी पूजा नहीं करने पर क्रोधित भी होते हैं अत: ऐसे अहंकारी की पूजा नहीं करनी चाहिए।

देवराज इन्द्र ने इसे अपना अपमान समझा और मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी। प्रलय के समान वर्षा देखकर सभी बृजवासी भयभीत हो गए और नन्द बाबा से इसका उपाय करने के लिए विनती करने लगे। तब मुरलीधर ने मुरली कमर में डाली और अपनी कनिष्ठा (सबसे छोटी) उंगली पर पूरा गोवर्धन पर्वत उठा लिया और सभी ब्रजवासियों को उसमें अपने गाय और बछड़े समेत शरण लेने को कहा।

इन्द्रदेव कृष्ण की यह लीला देखकर और अत्यधिक क्रोधित हुए जिससे वर्षा और तेज करदी। इन्द्र के घमंड मर्दन के लिए तब श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से कहा कि आप पर्वत के ऊपर रहकर वर्षा की गति को नियंत्रित करें और शेषनाग से कहा आप मेड़ बनाकर पानी को पर्वत की ओर आने से रोकें।

इन्द्रदेव लगातार सात दिन तक मूसलाधार वर्षा करते रहे तब उन्हे एहसास हुआ कि उनका मुकाबला करने वाला कोई आम मानव तो नहीं हो सकता अत: वे ब्रह्मा जी के पास पहुंचे और सब वृतान्त सुनाया। ब्रह्मा जी ने इन्द्र से कहा कि आप जिस कृष्ण की बात कर रहे हैं वह भगवान विष्णु के अवतार हैं। ब्रह्मा जी के मुख से यह सुनकर इन्द्रदेव अत्यंत लज्जित हुए और श्री कृष्ण से कहा कि प्रभु मैं आपको पहचान न सका इसलिए अहंकारवश भूल कर बैठा। आप दयालु हैं और कृपालु है इसलिए मेरी भूल को क्षमा करें। इसके पश्चात देवराज इन्द्र ने मुरलीधर की पूजा कर उन्हें भोग लगाया।

इस पौराणिक घटना के बाद से ही गोवर्धन पूजा की जाने लगी। गाय बैल को इस दिन स्नान कराकर उन्हें रंग लगाया जाता है व उनके गले में नई रस्सी डाली जाती है। गाय और बैलों को गुड़ और चावल मिलाकर खाना खिलाया जाता है।

गोवर्धन पूजा की विधि के लिए आइकन को स्पर्श करे -

पारम्परिक व्यंजन - मैसूर पाक

सामग्री -

- बेसन - 1.5 कप (150 ग्राम)
- चीनी - 1.5 कप (300 ग्राम)
- देशी घी - 1 कप (200 ग्राम)
- रिफाइन्ड तेल - 1 कप (200 ग्राम)
- इलाइची पाउडर - 1 छोटी चम्मच
- पानी - आधा कप

विधि:

• चीनी की चाशनी बना लीजिये, चीनी को किसी बड़ी भारे तले की कढ़ाई में डालिये, आधा कप पानी डालिये और चीनी को घुलने तक चाशनी को पकने दीजिये।

• बेसन को किसी प्याले में डालिये, आधा तेल मिला कर घोल बना लीजिये। दूसरी कढ़ाई में घी पिघलने के लिये रख दे, घी पिघलने के बाद बचा हुआ तेल घी में डाल दीजिये और गरम होने दीजिये।

• चाशनी को चैक कर लीजिये, चाशनी की एक बूद प्याली में डालिये, उंगली और अंगूठे की सहायता से चिपका कर देखिये कि चाशनी में अच्छा लम्बा तार निकलना चाहिये, चाशनी बन कर तैयार है।

• चाशनी में बेसन का घोल डालिये और लगातार चलाते हुये भूनिये, ध्यान रहे कि बेसन कढ़ाई के तले में लगना नहीं चाहिये। दूसरी तरफ गरम हो रहे घी से चमचे से घी भर कर बेसन वाली कढ़ाई में डालिये और बेसन को लगातार चलाते हुये भूनते रहिये, गैस धीमी और मीडियम ही रखिये। चमचे से गरम गरम घी बेसन में डालते जाइये और बेसन को दूसरे हाथ से भूनते रहिये। बेसन फूलने लगे, बेसन का हल्का सा कलर बदलने लगे, फूलते बेसन में जाली बनने लगे, बस तब हमारा मैसूर पाक बनकर तैयार है।

• जिस थाली या ट्रे में मैसूर पाक जमाना हो उसमें थोड़ा सा घी डालकर चारों ओर लगा दीजिये। गरम गरम जाली पड़ते बेसन को थाली में डालिये और थाली को खटखटा कर एक जैसा कर दीजिये। 5-10 मिनिट में मैसूर पाक हल्का ठंडा हो जाता है, मैसूर पाक को अपने मन पसन्द आकार में काट लीजिये और मैसूर पाक के जमने पर टुकड़े अलग कर लीजिये। बहुत ही अच्छा मैसूर पाक बनकर तैयार है।

इस दिवाली में आप मैसूर पाक बनाकर माता लक्ष्मी जी को भोग धराये।

• मैसूर पाक को एअर टाइट कन्टेनर में भर कर रख लीजिये और महिने भर तक जब भी मैसूर पाक को रखा जा सकता है।

पूनम राठी जी - विविधा कुकिंग क्लासेज

← आइकॉन पर स्पर्श करे

भाई दूज क्यों मनाई जाती है?

दीपावली के बाद गोवर्धन पूजन और उसके बाद भाई दूज का त्यौहार मनाया जाता है। इसी दिन से दीपावली के 5 दिनों तक चलने वाले त्योहार का समापन होता है। भाई दूज का त्यौहार भाई और बहन के प्यार और स्नेह को दर्शाता और व दोनों का रिश्ता सुदृढ़ करता है। हिन्दू धर्म में भाई-बहन के स्नेह-प्रतीक के दो त्यौहार मनाये जाते हैं - एक रक्षाबंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसमें भाई बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा त्यौहार, 'भाई दूज' का होता है। इसमें बहनें भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती हैं। भाई दूज का त्यौहार कार्तिक मास की द्वितीया को मनाया जाता है जिसे "भ्रातृ द्वितीया" भी कहते हैं।

हिंदुओं के बाकी त्योहारों की तरह यह त्यौहार भी परंपराओं से जुड़ा हुआ है, इसमें सूर्य देव की पुत्री यमुना और पुत्र यमराज से जुड़ा है। शास्त्रों के अनुसार इस दिन मृत्यु के देवता भगवान यम अपनी बहन यामी या यमुना के पास आए। यामी ने उनका 'आरती' और माला के साथ स्वागत किया, माथे पर 'तिलक' लगाया और उन्हें मिठाई और विशेष व्यंजन पेश किए। बदले में, यमराज ने उन्हें एक अनोखा उपहार दिया और घोषणा की कि इस दिन भाइयों को उनकी बहन द्वारा आरती और तिलक मिलेगा और लंबे जीवन का वरदान मिलेगा। यही कारण है कि इस दिन को 'यम द्वितीय' या 'यामादविथिया' भी कहा जाता है। मान्यता है कि इस दिन जो यम देव की उपासना करता है, उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है।

मान्यताओं के अनुसार भाई दूज का यह त्यौहार श्री कृष्ण से भी जुड़ा हुवा है, इस दिन राक्षस राजा नरकासुर के वध के पश्चात भगवान कृष्ण अपनी बहन सुभद्रा के पास गए, जिन्होंने मिठाई, माला, आरती और तिलक के साथ स्नेही रूप से अपने भाई का स्वागत किया।

भाई दूज या भाई टीका त्यौहार भाई-बहन के अनोखे रिश्ते का प्रतीक है जिसे भारत के हर हिस्से में मनाया जाता है। महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात में "भाऊ-बीज" और इस दिन बासुंदी पूरी (महाराष्ट्र) का विशेष महत्व होता है। पश्चिम बंगाल में भाई दूज को "भाई फोंटा" के रूप में भी जाना जाता है। इसमें बहनें तब तक उपवास करती हैं जब तक कि वे अपने भाई के मस्तक पर "फोंटा" (चंदन का पेस्ट) लगा ना लें और उनके खुशहाल जीवन के लिए प्रार्थना ना कर लें।

भाई दूज के दिन चित्रगुप्त की पूजा के साथ साथ लेखनी (कलम), दवात और किताबों की भी पूजा की जाती है। यमराज के आलेखक, चित्रगुप्त की पूजा करते समय यह कहे - "लेखनी पट्टिकाहस्तं चित्रगुप्त नमास्यहमं" ।

भाई दूज कैसे मनाई जाती है?

भाई दूज के दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमंत्रित करती हैं । बहनें अपने भाइयों का 'आरती' के साथ स्वागत करती हैं और उनके मस्तक पर सिन्दूर एवं चावल का तिलक लगाकर उनको मिठाई खिलाती हैं और उनके स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं और भाई अपनी बहनों के लिए जीवन की रक्षा करने का वादा करते हैं। यदि बहन अपने हाथ से भाई को जीमाए तो भाई की उम्र बढ़ती है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं। बहन चचेरी अथवा ममेरी कोई भी हो सकती है। यदि कोई बहन नहीं हो तो गाय या नदी का ध्यान करके अथवा उसके समीप बैठ कर भोजन कर लेना भी शुभ माना जाता है। यदि किसी महिला के भाई नहीं है या जिनके भाई बहुत दूर रहते हैं, वे आरती करते हुए चंद्रमा से प्रार्थना कर सकती हैं।

लघुकथा - अलविदा, मेरे प्यारे बेटे!

बरसात का मौसम हो चला था। सूखे दरख़्त पानी की आस लगाए अब भी ऊपर टकटकी लगाए खड़े थे। पूरे चार बरस हो आए थे आख़िरी मानसून आए हुए, कारण भी लगभग तय ही था, फैक्ट्रियों और कोंक्रीट के महल खड़े करने के लिए जंगल और पहाड़ काटने से वातावरण का संतुलन जो बिगड़ गया था। अपने रसूखदार होने का दंभ भरते हुए माटी का सीना चीरकर पी गए थे सारा पानी वो कमबख्त, जो अपने आपको सर्वोपरि मान बैठे थे।

"अब कैसी रही? अरे, अब कैसी रही बोलो, जब प्रकृति माँ ने तुम्हें तुम्हारी अदनी सी असली औकात दिखा दी..." एक गाँव के सूने आँगन में खड़ा बूढ़ा पेड़, जो कई दशकों के सावन देख चुका था, अपना ग़ुस्सा निकालते हुए चिल्ला रहा था, "...अरे मुफ्त में मिला, तो सारा कुछ अपनी बपौती समझ बैठे थे क्या, तुम दोगले इंसान हो। अब कहाँ बचा है खुद तुम्हारे लिए, जो तुम हमें पिला दोगे, क्यों? आओ, घटिया सोच रखने वालों, कहाँ भाग गए हो लालचियों, अपनी-अपनी आलीशान कोठियों को छोड़कर, पानी की तलाश में?"

"दादाजी, क्या हुआ दादाजी?" पास ही पड़े एक बीज ने आतुर होकर पूछा, जिसकी अभी तक कोंपल भी नहीं फूट पाई थी।

"लगता है, अब मेरा भी अंतिम समय आ गया है बेटे..." बूढ़ा पेड़ दम भरते हुए बोला, "... निर्लज्ज और एहसान-फरामोशों को जरा भी दया नहीं आई थी और बड़ी-बड़ी मशीनों से काट डाला था मेरे अपनों को, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी उन शैतानों के लिए बलिदान कर दी थी। अरे, क्या कुछ नहीं किया था हमने? तुम्हें खेलने दिया, झूलने दिया, मीठे-मीठे फल दिए, छाव दी और तो और तुम्हारे आलीशान घरों को सजाने-संवारने तक के लिए हमने अपने आपको कुर्बान कर दिया था।"

"ये बलिदान क्या होता है दादाजी?" नन्हें बीज ने उत्सुकतापूर्वक पूछा। "किसी खास उद्देश्य से अपने आपको पूरी तरह से अर्पण कर देना ही बलिदान कहलाता हैं, मेरे बेटे..." बूढ़ा पेड़ रुंधे गले से समझा रहा था, "...हम अपने जन्म से लेकर मरण तक निस्वार्थ भाव से सेवा करते रहते हैं; अपना प्रेम लुटाते हैं। माटी में अपने आप को न्योछावर कर बूढ़े होने तक बलिदान करना ही तो हमारा एकमात्र धर्म है बेटे।"

"और मनुष्यों का धर्म क्या है दादाजी, सिर्फ हमें काटना और अपना मतलब पूरा करना?" भोला बीज निराश मन से पूछ बैठा।

“नहीं, नहीं बेटे, समय कभी भी एक जैसा नहीं रहा। कभी हमारे पूर्वजों को पूजने और सहेजने वाले लोग भी हुआ करते थे...” बूढ़े पेड़ ने अपनी भूली बिसरी पुरानी यादों पर से मिट्टी साफ करते हुए बताया, “...बहुत पहले की बात हैं, तब मेरी नन्हीं कोंपल ही फूटी थी बस, मैंने देखा कि इस घर के मालिक सहित पूरे गाँव के लोग नए-नए कपड़े पहने, ढ़ोल-नगाड़ों के साथ नाच-गाना कर रहे थे और हमारे आजू-बाजू घूम-घूम कर कुछ रीति-रिवाज कर हर्षो-उल्लासित हो खुशियाँ बाट रहे थे। वे लोग बड़े आनंदित रहते थे और हमें अपनी जान से भी ज्यादा चाहते थे, फिर कुछ सालों बाद ऐसा युग आया कि पेड़ों-पौधों ,जंगलों सहित नदी-तालाब और यहाँ तक कि जमीन को भी कुछ मुट्ठीभर अमीरों को कौड़ियों के दाम बेच दिया गया; कुछ निजीकरण जैसा शब्द बोलते थे उसे। फिर उन सूट-बूट वालों ने, न रात देखा न दिन और झोंक दी अपनी पूरी ताकत हमें जड़ से उखाड़कर बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ और आलीशान कॉलोनियां बनाने में।

बेटा, मैंने और अपने परिवार ने इतना काला धुंआ पिया है कि हम अंदर से बिल्कुल काले और खोखले हो गए हैं। कई दफा प्रकृति माँ ने अपना रौद्र रूप भी दिखाया, लेकिन इन जाहिल-गवारों ने, प्रकृति को पूजने और सहेजने वालों के साथ-साथ स्वयं हमें भी खत्म कर दिया।”

“दादाजी संभालिए अपने आप को, आप गिर रहे हैं।” बीज ने चिंतित होते हुए कहा, तो बूढ़ा पेड़ नम आँखों से बीज को निहारता हुआ बोला, “मेरे आखिरी शब्द हमेशा याद रखना बेटे, अगर जी पाओ, तो खुब फलना और फूलना। अपने नैसर्गिक धर्म का पालन करते हुए बलिदानी होने की पराकाष्ठा को पार कर जाना, लेकिन कभी भी मनुष्य जाति पर न तो भरोसा करना और न ही कभी उपकार करना। तुझे अपना ख्याल खुद ही रखना होगा बेटे, अब कोई नहीं आएगा तुझे सहेजने, तुझे पूजने। अलविदा, मेरे प्यारे बेटे, अलविदा।”

यह कहानी “आभासी प्रतिबिम्ब” पुस्तक से ली गई हैं।
- कपिल सहारे जी

"जगमग करने लगी है,
दिवाली के आने का अहसास कराती हुई
चारों तरफ़ की गलियाँ,
यहीं तो है हमारी
भारतीय परम्परा ..."
- बबीता पोद्दार जी

लाभ पंचमी का महत्व -

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को लाभ पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है जिसे "सौभाग्य पंचमी", "लेखनी पंचमी" और "ज्ञान पंचमी" के नाम से भी जाता है। यह शुभ तिथि दिवाली पर्व का ही एक हिस्सा है कुछ स्थानों पर दीपावली के दिन से नववर्ष की शुरूआत के साथ ही सौभाग्य पंचमी को व्यापार व कारोबार में तरक्की और विस्तार के लिए भी बहुत ही शुभ माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि सौभाग्य पंचमी के दिन विधिवत पूजा-प्रार्थना से जीवन में सुख तथा समृद्धि आती है। साथ ही लाभ पंचमी के दिन शंकर भगवान की पूजा करने से सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूरी होती है, परिवार में सुख-शांति आती है तथा श्री गणेश पूजन समस्त विघ्नों का नाश कर कारोबार को समृद्ध और प्रगति प्रदान करता है।

लाभ पांचम का महत्व -

हिंदू ग्रंथों में लाभ को परिभाषित किया गया है -
"लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः
यशेम इंदेवरा श्याम हुऊदयम थौ जनार्दन"

लाभ पंचमी के दिन किसी नए व्यवसाय के काम को शुरू करना बहुत शुभ माना जाता है। दिवाली के दिन जो लोग लक्ष्मी पूजन नहीं कर पाते है, वो इस दिन अपनी दुकान तथा व्यवसायी संस्थान खोलकर पूजन करते है। इस दिन माँ लक्ष्मी एवं गणेश का पूजन करके भी सुख समृद्धि, ऐश्वर्य और कारोबार वृद्धि की प्रार्थना कर सकते है। लाभ पंचमी के दिन लोग एक दुसरे को आने वाले समय में अच्छे लाभ व व्यापार के लिए बधाई देते है।
यह पर्व गुजरात में बड़ी धूमधाम से मनाते है । भारत के कई हिस्सों में दिवाली का त्यौहार भाई दूज के साथ खत्म हो जाता है। जहाँ धनतेरस, नरक चौदस, दीपावली, अन्नकूट, भाई दूज का त्यौहार मनाते है पर गुजरात में ये त्यौहार धनतेरस से शुरू होकर लाभ पंचमी को समाप्त होता है।
दिवाली के बाद दुसरे दिन गुजरात में लोग बाहर घूमने या यात्रा पर चले जाते है और लाभ पंचमी के दिन सब लौटकर अपने कामकाज में जुट जाते है, और नए तरीके से काम शुरूआत करते है। इस दिन से वहां

व्यवसायी लोग नया बहीखाता शुरू करते है, जिसे ' खातू ' भी कहते है। खातू की विधिपूर्वक पूजा करते है जिसमें सबसे पहले कुमकुम से बायीं तरफ शुभ और दाहिने तरफ लाभ लिखते है और बीच में स्वास्तिक बनाते है।

भारत के कुछ क्षेत्र में लाभ पंचमी के दिन लोग विद्या की पूजा करते है और जैन समुदाय के लोग ज्ञानवर्धक पुस्तक की पूजा करते है, साथ ही और अधिक बुद्धि ज्ञान में वृद्धि के लिए प्रार्थना करते है।

सौभाग्य पंचमी महत्व -

व्यापार के क्षेत्र में सौभाग्य पंचमी का विशेष महत्व है। लाभ पंचमी के शुभ अवसर पर व्यापारी नए काम की शुरुआत करते हैं। साथ ही खुशी मनाने के लिए घरों को रोशनी से सजाया जाता है तथा रात में आतिशबाजी भी की जाती है। लाभ पंचमी के दिन शुभ मूहूर्त होने के कारण बाजार में खरीदारी भी की जाती है। इसके अलावा इस शुभ अवसर पर विवाह और अन्य मांगलिक कार्यों हे तु खरीद दारी करना भी अच्छा माना जाता है। सौभाग्य पंचमी के व्रत तथा पूजा करने से जीवन में सुख और सौभाग्य बढ़ता है।

सौभाग्य पंचमी के शुभ अवसर पर विशेष मंत्र जाप द्वारा भगवान श्री गणेश का आवाहन करते हैं जिससे शुभ फलों की प्राप्ति होती है। कार्यक्षेत्र, नौकरी और कारोबार में समृद्धि की कामना की पूर्ति होती है। इस दिन गणेश के साथ भगवान शिव का स्मरण शुभ फलदायी होता है। सुख-सौभाग्य और मंगल कामना को लेकर किया जाने वाला सौभाग्य पंचमी का व्रत सभी की इच्छाओं को पूर्ण करता है। इस दिन भगवान के दर्शन व पूजा कर व्रत कथा का श्रवण करते हैं। सौभाग्य पंचमी के अवसर पर मंदिरों में विशेष पूजा अर्चना की जाती है गणेश मंदिरों में विशेष धार्मिक अनुष्ठान होते हैं।

सौभाग्य पंचमी पूजा विधि -

प्रातः जल्दी उठकर स्नान इत्यादि से निवृत होकर सर्वप्रथम सूर्य दे व को जल अर्पण करें, इसके बाद शुभ मूहूर्त में भगवान शिव व गणेश जी की प्रतिमाओं को स्थापित किया जाता है। श्री गणेश जी को सुपारी पर मौली लपेटकर चावल के अष्टदल पर विराजित किया जाता है । भगवान गणेश को चंदन, सिंदूर, अक्षत, फूल, दूर्वा से पूजना चाहिए तथा भगवान शिव को भस्म, बिल्वपत्र, धतूरा, सफे द वस्त्र अर्पित कर पूजन किया जाता है । पूजा करने के बाद द्वार के दोनों ओर स्वस्तिक का निर्माण करें । सौभाग्य पंचमी पर विशेष मंत्र का जाप कर भगवान श्री गणेश का आवाहन करते हैं, इस दिन गणेश के साथ भगवान शिव का स्मरण शुभ फलदायी होता है -

गणेश मंत्र – लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्। आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।

शिव मंत्र – त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे। त्रिशूल धारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः।।

मंत्र के बाद भगवान गणेश व शिव की धूप, दीप व आरती करनी चाहिए और प्रसाद अर्पण करों गणेश जी को मोदक का तथा शिवजी को दूध से बने सफेद पकवानों का भोग लगाया जाता है फिर हाथ जोड़ कर भगवान से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगे और कार्य वृद्धि के लिए आशीर्वाद। अंत में भगवान को अर्पित प्रसाद समस्त लोगों में वितरित करें व स्वयं भी ग्रहण करें।

जीवन एक संसार

रिश्तों के बाजार में वही
व्यक्ति अकेला रह जाता है,
जो दिल और जुबान से
साफ होता है।

हम "प्रसन्न" हैं, यह स्थिति
"उत्तम" है लेकिन,
हमारी वजह से कोई और प्रसन्न है,
यह परिस्थिति "सर्वोत्तम" है।

यह कोई ज़रुरी तो नहीं कि.....
हर बार शरीर की जांच में खून,
कैल्शियम, विटामिन या अन्य
ही घटता हो,
कभी "व्यक्तित्व" की भी रिपोर्ट करवा
कर देखना चाहिए...
क्या पता.... दया, करुणा, मानवता,
दोस्ती, व्यवहारिकता या इंसानियत
भी घट रही हो

पैसे वाले की चमचागिरी
करती है ये दुनिया,
वरना रिश्तेदार तो
भिखारी के भी होते है

मुफ्त में नहीं सीखा
उदासी में मुस्कुराने का हुनर,
बदले में जिंदगी की हर
ख़ुशी तबाह की है हमने

जिंदगी दो पल की है
जियो तो फूल की तरह
बिखरो तो खुशबू की तरह

जाने क्यों मनाया जाता हैं छठ पूजा का त्यौहार

छठ पूजा साल में दो बार होती है एक चैत्र मास में और दूसरा कार्तिक मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि, पंचमी तिथि, षष्ठी तिथि और सप्तमी तिथि तक मनाया जाता है। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को 'चैती छठ' और कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले पर्व को 'कार्तिक छठ' कहा जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व को छठ पर्व, छठ या षष्ठी पूजा, छठी माई पूजा, डाला छठ और सूर्य षष्ठी पूजा कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी को मनाया जाने वाला एक हिन्दू पर्व है।

सूर्योपासना का यह अनुपम लोकपर्व मुख्य रूप से बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। कहा जाता है कि यह पर्व बिहारियों का सबसे बड़ा पर्व है ये उनकी संस्कृति है जिसे बड़े धुम धाम से मनाया जाता है। ये पर्व जो मुख्य रूप से ऋषियों द्वारा लिखी गई ऋग्वेद में सूर्य पूजन, उषा पूजन और आर्य परंपरा के अनुसार बिहार मे बड़े हर्ष और उल्लास से मनाया जाता हैं।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार षष्ठी देवी को ब्रह्मा जी की मानस पुत्री भी कहा गया है। जिन्हे माँ दुर्गा के छठे रूप कात्यायनी देवी (जिसकी पूजा नवरात्रि की षष्ठी तिथि पर होती है) को भी छठ माता का ही रूप माना जाता है। छठ मइया को संतान देने वाली माता के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि छठ पर्व का व्रत रखने से निसंतानों को संतान भी प्राप्त हो जाती है।

छठ पूजा के तथ्य -

छठ पूजा सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु और उनकी बहन छठी मइया को समर्पित है ताकि उन्हें पृथ्वी पर जीवन देने के लिए धन्यवाद और शुभकामनाएं देने का अनुरोध किया जाए। छठ पूजा चार दिनों तक चलने वाला लोक पर्व है, जिसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होती है और समापन कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होता है। जिसे नहाय खाय, लोहंडा या खरना, संध्या अरख और उषा अरख के रूप में मनाया जाता है। छठ व्रत के अनुष्ठान एक कठिन तपस्या की तरह है। यह छठ व्रत अधिकतर महिलाओं द्वारा किया जाता है पर कुछ पुरुष भी यह व्रत रखते हैं। व्रत रखने वाली महिलाओं को "परवैतिन" कहा जाता है। चार

दिनों के इस व्रत में पवित्र स्नान, उपवास और निर्जल (बिना पानी पिए), लं बे समय तक पानी में खड़ा होना, प्रसाद (प्रार्थना प्रसाद) और अरख देना शामिल है। व्रती को भोजन के साथ ही सुखद शैय्या का भी त्याग करना होता है। इस पर्व के लिए व्रती को फर्श पर एक कम्बल या चादर के सहारे ही रात बितानी होती हैं। इस उत्सव में शामिल होने वाले लोग नये कपड़े पहनते हैं, जिनमें किसी प्रकार की सिलाई नहीं की गयी होती है व्रती को ऐसे कपड़े पहनना अनिवार्य होता है। इसलिए महिलाएं साड़ी और पुरुष धोती पहनकर छठ पूजा करते हैं।

नहाय खाय (पहला दिन) -

छठ पर्व के पहले दिन को नहाय खाय कहा जाता है। इस दिन स्नान के बाद घर की साफ-सफाई करके व्रती शाकाहारी भोजन ग्रहण कर छठ व्रत की शुरुआत करते हैं। इस दिन को कद्दू-भात भी कहा जाता है। जिसमें व्रत के दौरान चावल, चने की दाल और कद्दू घिया या लौकी की सब्जी बनाकर प्रसाद रूप में ग्रहण करते है। खाना कांसे या मिट्टी के बर्तन में पकाया जाता है। खाना पकाने के लिए आम की लकड़ी और मिट्टी के चूल्हे का इस्तेमाल किया जाता है। जब खाना बन जाता है तो सर्वप्रथम व्रती खाना खाते है उसके बाद ही परिवार के अन्य सदस्य खाना खाते है।

लोहंडा या खरना (दूसरा दिन) -

लोहंडा या खरना, छठ पूजा का दूसरा दिन है। खरना का मतलब पूरे दिन के उपवास से होता है। इस दिन व्रत रखने वाला व्यक्ति जल की एक बूंद तक ग्रहण नहीं करता है और शाम को भोजन करता है। संध्या के समय खरना का प्रसाद चावल को गन्ने के रस में बनाकर या चावल का पिठ्ठा और गुड़ की खीर, घी लगी हुई रोटी और फलों का सेवन करते हैं, उसके बाद घर के बाकी सदस्यों को इसे प्रसाद के तौर पर दिया जाता है। इसके बाद अगले 36 घंटों के लिए व्रती निर्जला व्रत रखते है।

संध्या अर्घ्य (तीसरा दिन) -

छठ पर्व के तीसरे दिन संध्या के समय सूर्य देव को अरख दिया जाता है। व्रत रखने वाले शाम को बाँस की टोकरी (जिसे डलिया और दउरा भी कहते है) में फलों, ठेकुआ, चावल के लड्डू (जिसे कचवनिया भी कहते है), चीनी का सांचा आदि से अरख का सूप सजाते है और देवकारी में रख दिया जाता है। पूजा - अर्चना करने के बाद शाम को वह दउरा घर के पुरुष अपने हाथो से उठाकर छठ घाट पर ले जाता है। यह अपवित्र न हो इसलिए इसे सिर के ऊपर की तरफ रखते है। छठ घाट की तरफ जाते हुए रास्ते में महिलाएं छठ का गीत गाते हुए जाती है।

नदी या तालाब के किनारे जाकर महिलाएं घर के किसी सदस्य द्वारा बनाये गए चबूतरे पर बैठती है। नदी से मिट्टी निकाल कर छठ माता का जो चौरा बना रहता है उस पर पूजा का सारा सामान रखकर नारियल चढाते है और दीप जलाते है। उसके बाद सूर्यास्त से कुछ समय पहले सूर्य देव की पूजा का सारा सामान लेकर घुटने भर पानी में जाकर खड़े होकर सूर्य पूजा करते है और अरख देते हैं। अरख के समय सूर्य देव को जल और दूध चढ़ाया जाता है और डूबते हुए सूर्य देव को अर्घ्य देकर पांच बार परिक्रमा करते है। इसके बाद प्रसाद भरे सूप से छठी मैया की पूजा की जाती है। सूर्य देव की उपासना के बाद रात्रि में छठी माता के गीत गाए जाते हैं और व्रत कथा सुनी जाती है।

उषा अर्घ्य (चौथा दिन) -

छठ पर्व के अंतिम दिन व्रती को सूर्योदय के पहले से उसी तालाब, नहर, नदी के घाट पर पहुंचकर उगते सूर्य को अरख देना होता हैं। व्रती को पूरब दिशा की ओर मुंह कर पानी में खड़े होकर सूर्य उपासना करनी चाहिए, उगते हुए सूर्य को अरख देकर अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए भगवान् सूर्य से प्रार्थना की जाती है। इसके बाद छठ माता से संतान की रक्षा और पूरे परिवार की सुख शांति का वर मांगा जाता है। इसके बाद व्रति घर वापस आकर गाँव के पीपल के पेड़ जिसको "ब्रह्म बाबा" कहते हैं वहाँ जाकर पूजा करते हैं। पूजा के बाद व्रती कच्चे दूध का शरबत पीकर और थोड़ा प्रसाद खाकर व्रत को पूरा करती हैं, जिसे पारण या परना कहा जाता है। व्रती खरना के दिन से आज तक निर्जला उपवासोपरान्त आज सुबह ही नमक युक्त भोजन कर सकते हैं।

छठ पूजा विधि -

- बांस की 3 बड़ी टोकरी, बांस या पीतल के बने 3 सूप, थाली और ग्लास
- चावल, लाल सिंदूर, दीपक, नारियल, हल्दी, गन्ना, सुथनी, सब्जी, दूध और शकरकंदी
- नाशपती, बड़ा नींबू, शहद, पान, साबुत सुपारी, कैराव, कपूर, चंदन और मिठाई
- प्रसाद के रूप में ठेकुआ, मालपुआ, खीर-पुड़ी, सूजी का हलवा, चावल के बने लड्डू

अरख देने की विधि -

बांस की टोकरी में पूजा की सामग्री रखें। सूर्य को अर्घ्य देते समय सारा प्रसाद सूप में रखें और सूप में ही दीपक जलाएँ। फिर नदी या तालाब में उतरकर सूर्य देव को अरख देते है । उसके बाद छठ माता की पूजा करते है।

छठ पूजा से जुड़ी पौराणिक कथा के लिए आइकन पर स्पर्श करे

बाल दिवस

कविता संग्रह

"बचपन बचाओ"

बचपन में मैं खेला नहीं,
ऐसा मैं अकेला नहीं।
गरीबी का पालन पोषण करता,
अपने बचपन को उसमें दफन करता।
कंधों पर मेरे घर का बोझ था
शरीर से कोमल कमजोर था।
सुबह से शाम तक हुक्म चलता था,
बचपन से ही जुल्म हुआ कितना।
बचपन में मैं खेला नहीं,
स्कूल को मैंने देखा नहीं,
ऐसा मैं अकेला नहीं।
कंधे मेरे बोझ से दबे हुए,
आंखें मेरी सपनों में डूबी हुई।
मैं भी बच्चा बनना चाहता हूँ,
मैं भी पढ़ना चाहता हूँ।
बचपन मेरा बीत न जाए।
सपने मेरे बिखर न जाए।
कोई तो हमारा बचपन बचाओ ।
बड़ों से हमें भी बच्चा बनाओ।

- संगीता दरक जी

"नन्हें बच्चे बड़े सयाने"

आज के बच्चे बड़े सयाने, आत्मनिर्भर, उत्साही, उद्यमी
नहीं किसी से कम कैसे माने,आज के बच्चे बड़े सयाने
छोटी-छोटी उँगलियों से, पल में देखो कमाल कर जाते
दादी को मैसेज समझाते, दादाजी को टाइपिंग सिखलाते
हाथ न आते उड़ते जाते, सरपट-सरपट दौड़ लगाते
मोबाइल के ये बड़े दीवाने,आज के बच्चे बड़े सयाने
वही बस्ता वही स्कूल, पर थोड़े से हो गए कूल
कच्ची उम्र में बने बैठे, ज्ञान के असीमित पूल
कोमल हृदय आज भी उतना,और करते वही सारी भूल
रहते छलकपट से अनजाने,आज के बच्चे बड़े सयाने
चटर-पटर ऐसे बोले, बात मनवाने को रहे अड़े
छोटे हैं पर काम बड़े, हर क्षेत्र में लिए मैडल खड़े
कंप्यूटर के ये मास्टरमाइंड, पल में करें सब कुछ फाइंड
नित नए बनाएँ बहाने,आज के बच्चे बड़े सयाने
नन्हीं फुलवारी गड़े कहानी,रोज करें कोई आनाकानी
रंगबिरंगी इनकी दुनिया, मासूमियत से करें मनमानी
नादान शरारतें मन लुभाए, मीठी बातें सबको हर्षाए
अतरंगी है इनके फसाने,आज के बच्चे बड़े सयाने
हैरान करें इनके विचार, जिज्ञासा, उन्माद बहुत होशियार
आसमाँ भी छूलेये, जो मिले सकारात्मक प्यार
बच्चे हमारी अमूल्य निधि,भविष्य की उज्ज्वल बागडोर
इनके ही हाथों में है आधुनिनिक युग की स्वर्णिम भोर
करके मानें एक बार जो ठाने,आज के बच्चे बड़े सयाने।

- दीपमाला माहेश्वरी जी

तुलसी विवाह

हिंदू धर्म में तुलसी का बहुत अधिक महत्व है। पूजा, यज्ञ, हवन, शादी, गृह प्रवेश और मुंडन जैसे सारे शुभ कार्य तुलसी के बिना अधूरे माने जाते है। इसके अलावा तुलसी को लेकर कुछ मान्यताएं भी हैं, जैसे भगवान गणेश को कभी भी तुलसी नहीं चढ़ाई जाती है।

तुलसी कौन थी?

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करे

हंसी ख़ुशी के पल

हर भारतीय सलाह देने के बाद
ये जरूर बोलता है
"आगे आपकी मर्ज़ी"
ताकि सलाह गलत निकले तो
इल्जाम खुद पर न आये।

फैन तो हमारे
भी बहुत है
.
.
पर सर्दी की वजह से
घर वाले चलाने नहीं देते

चिंता और तनाव दूर करने का
एक ही उपाय है,
आँखे बंद करके एक ही
मंत्र का जाप करे
"भाड़ में गयी दुनिया सारी"

एक राजा ने ज्योतिषियों को बुलाया
और जेल में डाल दिया,
ज्योतिषी - हमारा गुनाह क्या है राजन ?
राजा - यही कि अगर आपको "
अपना भविष्य"
पता होता तो यहां आते ही नहीं

मृत्यु के बाद भी,
फेसबुक - व्हाट्सप्प देखना है तो...
"नेत्रदान जरूर करें"
जिंदगी के साथ भी,
जिंदगी के बाद भी।

जज - तुमने एक पुलिस
ऑफिसर की जेब में
जलती माचिस की तीली क्यों रखी ?
आदमी - उसने ही कहा था...
जमानत करवानी है तो पहले
जेब गरम करो।

देव दिवाली

देव दिवाली का त्यौहार कार्तिक पूर्णिमा पर भारत वर्ष में उत्तर प्रदेश के वाराणसी (काशी और बनारस पुराने नाम) में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह विश्व के सबसे प्राचीन शहर काशी की संस्कृति एवं परम्पटा की अनूठी मिसाल है। यह त्यौहार दीपावली के पंद्रह दिन बाद आता है। माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन देवतागण दिवाली मनाने इस दिन काशी आते है। इसलिए पूटी काशी को रौशनी से सजाया जाता है। बनारस में गंगा नदी के घाटों को दीपों से जगमगाया जाता है। इस दिन माँ गंगा और शिव जी की आराधना की जाती है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार तारकासुर दैत्य के 3 पुत्र थे - तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली इन तीनों को त्रिपुरा कहा जाता था। शिव-पार्वती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था (क्योंकि तारकासुर को ब्रह्मा जी ने वरदान दिया था कि शिव के अंश से ही उसकी मृत्यु हो)। तारकासुर के वध का बदला लेने के लिए उसके तीनों पुत्रों ने तपस्या करके ब्रह्मा जी से अमर होने का वरदान मांगा। लेकिन ब्रह्मा जी ने उन्हें यह वरदान देने से मना कर दिया और कहा कि तुम उसकी जगह कुछ और वरदान मांग लो। इसके बाद तारकासुर के पुत्रों ने कहा कि वह चाहते हैं कि उनके नाम के अलग - अलग दिशाओं में नगर बनवाए जाएं और साथ ही उन्होंने वरदान में मांगा कि उनकी मृत्यु तभी हो सकती है जब अभिजीत नक्षत्र में कोई शांत पुरुष, असंभव रथ और असंभव अस्त्र से तीनों भाईयों को एक ही दिशा में एक ही वार से नष्ट कर सके। ऐसा वरदान ब्रह्मा जी ने उन्हें तथास्तु कह कर दे दिया। इस वरदान के बाद तारकासुर के तीनों पुत्रों ने अपने बाहुबल से तीनों लोकों में अपना राज्य स्थापित कर लिया और सब जगह हाहाकार मचा दिया उनके अत्याचार से देवतागण महादेव शिव के समक्ष तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली (त्रिपुरासुर) राक्षसो से मुक्ति पाने के लिए विनती करने लगे। तब भगवान भोलेनाथ ने विश्वकर्मा से एक दिव्य रथ का निर्माण करवाया जिसके पहिये सूर्य और चन्द्रमा बने। उस दिव्य रथ पर सवार होकर भगवान शिव दैत्यों का वध

करने निकले, देव और राक्षसों के बीच युद्ध छिड़ गया और जब युद्ध के दौरान तीनों दैत्य यानी त्रिपुरा एक साथ एक ही दिशा में आए तो भगवान शिव शंकर ने एक तीर से ही तीनों का वध कर दिया। भगवान शिव ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन उन राक्षसों का वध कर उनके अत्याचारों से सभी को मुक्त कराया और तभी से भगवान शिव को "त्रिपुरारी" व "त्रिपुरांतक" भी कहा जाने लगा। इससे विजय दिवस की खुशी में देवताओं ने स्वर्ग लोक में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया था तभी से कार्तिक पूर्णिमा को देव दिवाली मनायी जाने लगी। माना जाता है कि आज भी इस दिन भगवान शिव धरती पर आते हैं।

काशी में देव दिवाली उत्सव मनाये जाने के सम्बन्ध में मान्यता है कि राजा दिवोदास ने अपने राज्य काशी में देवताओं के प्रवेश को प्रतिबन्धित कर दिया था, कार्तिक पूर्णिमा के दिन रूप बदल कर भगवान शिव काशी के पंचगंगा घाट पर आकर गंगा स्नान कर ध्यान किया, यह बात जब राजा दिवोदास को पता चला तो उन्होंने देवताओं के प्रवेश प्रतिबंध को समाप्त कर दिया। इस दिन सभी देवताओं ने काशी में प्रवेश कर दीप जलाकर दीपावली मनाई थी। देव दिवाली एक दिव्य और अद्भुत त्यौहार है। इस दिन प्रबुद्ध मिट्टी के लाखों दीपक गंगा नदी के पवित्र जल पर तैरते है। एक समान संख्या के साथ विभिन्न घाटों और आसपास की इमारतों की सीढ़ियों पर सूर्यास्त के समय दीये प्रज्वलित किये जाते है। इस अवसर पर यह अद्भुत नजारा होता है और उसमें एक अलग ही धार्मिक उत्साह देखने को मिलता है। देव दिवाली का आयोजन सबसे पहले बनारस के पंचगंगा घाट पर सन्न 1915 में हजारों की संख्या में दिये जलाकर की गई थी। नारायण गुरू नाम के एक सामाजिक कार्यकर्ता ने युवाओं की टोली बनाकर कुछ घाटों से इसकी शुरूआत की थी, इसके बाद धीरे-धीरे इस पर्व की लोकप्रियता बढ़ने लगी।

देव दिवाली पूजा विधि -

- देव दिवाली के दिन सूर्योदय से पहले गंगा स्नान करें करना चाहिए। गंगा में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। अगर गंगा स्नान संभव न हो तो घर पर ही नहाने के पानी में थोड़ा गंगाजल मिलाकर स्नान कर लें।
- शाम के समय भगवान गणेश, शिव शंकर और विष्णु जी की विधिवत पूजा करनी चाहिए। उन्हें फूल, घी, नैवेद्य और बेलपत्र अर्पित करें।
- इसके बाद प्रभु शिव के मंत्र **"ॐ नमः शिवाय"** का जाप करना चाहिए और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें - **"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात " ॥**
- इसके बाद भगवान विष्णु को पीले फूल, नैवेद्य, पीले वस्त्र और पीली मिठाई अर्पित करें। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लिया था।
- अब इन मंत्रों का जाप करें- **"ॐ नमो नारायण नमः नमो स्तवन अनंताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरू बाहवे। सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ॥"**
- इन मंत्रों के जाप के बाद भगवान गणेश, शिव और विष्णु की आरती करें।
- गंगा घाट जाकर दीपक जलाएं। अगर गंगा घाट जाना संभव न हो तो घर के अंदर और बाहर दीपक जलाएं।
- तुलसी जी के पास दीपक जलाएं।

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
CALL US AT
+918080518745

We Build Your
BRAND Story
to inspire your audience

- Logo Design
- Graphic Design
- Website Design
- Content Writing
- Digital Marketing
- Ecommerce Solution

www.mxcreativity.com

पत्रिका खोलने के
लिए क्लिक करें

देश की पहली
साहित्यिक ई-पत्रिका
जो पढ़ी और सुनी
भी जा सकती है
तथा जिसमें संगीत के
लिक्स भी है जिनसे
निर्मल आनंद
उठाया जा सकता है।

मूल्य :

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से
आपका सन्देश स्वचालित
रूप से पहुँच जायेगा और
नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका
मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश
नहीं भेज पाए तो निम्न मोबाइल नम्बर के
वाट्सएप द्वारा अपना सन्देश भेजें।

8610502230 (केवल सन्देश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

ई - पत्रिका के पिछले अंक

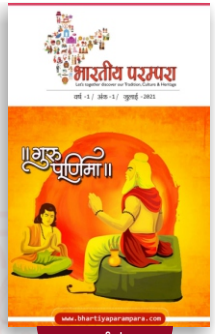

जुलाई अंक

अगस्त अंक

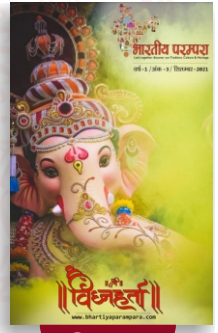

सितम्बर अंक

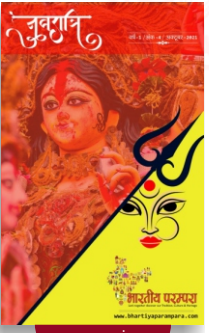

अक्टूबर अंक

पढ़ने के लिए ई - पत्रिका पर स्पर्श करे

हार्दिक आभार

भारतीय परंपरा टीम की तरफ से आप सभी को दीपावली की ढेरो बधाईया, आपकी दीपावली मंगलमय हो।दीपावली पर्व को धूमधाम से मनाये साथ में कोरोना महामारी, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और पटाखों से जलने से स्वयं बचे और दूसरों की भी रक्षा करे।

www.bhartiyaparampara.com